मेरे बांके बिहारी का आशिक़ ये ज़माना है

कोई पागल है इनका, कोई इनका दीवाना है
मेरे बांके बिहारी का, आशिक़ ये ज़माना है

यही रास बिहारी है, यही कुंज बिहारी है
हरिदास दुलारा है, बड़ा ही मस्ताना है

जब मुरली बजाता है, जब रास रचाता है
अपना ये बना करके, लूट लेता ज़माना है

दिलकश अदाएं हैं, बड़ी तिरछी निगाहें हैं
इस हुस्न के साक़ी की, आँखें मैखाना है

ब्रजमंडल का रसिया, श्री राधा मन बसिया
कहे 'मधुपहरि' का तो, सबसे याराना है

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)
स्वर : सर्व मोहन (टीनू सिंह)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36912/title/mere-banki-bihari-ka-aashik-yeh-jamana-hai

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |